□□□□□□ □□□□□

जनसत्ता 29 जून, 2014 : शरिडी केसाइं बाबा केबारे में द्वारकापीठ केशंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद की बेवजह टिप्पणियों ने □कबार फरि समूचे भारतीय समाज- खासकर हदिू समाज- को आईना देखने पर मजबूर कर दयिा है□ स्वामी स्वरूपानंद ने हदिुओं से कहा है कि वे साइं बाबा केमंदरि में न जा□ं, क्योंकि उनकी राय में उन्हें भगवान नहीं माना जा सकता□ स्वामी स्वरूपानंद को इस बात पर भी □तराज है कि साइं बाबा केमंदरि को सालाना अरबों रुप□ की आमदनी होती है□ कांग्रेस केनजदीकमाने जाने वाले इन शंकराचार्य की यह भी राय है कि साइं बाबा को हदिू-मुसलमि □क्ता का प्रतीकनहीं माना जा सकता□

द्वारकापीठ को महान दार्शनकिआदि शंकराचार्य द्वारा स्थापति चार मठों में गनिा जाता है□ नवीं शताब्दी केशुरुआती वर्षों में जब इन मठों की स्थापना हुई थी, तब इन्होंने कर्मकांड पर आधारति मीमांसा और संसार से वरिक्तिपर आधारति बौद्ध मत का वरिोध करके□ कमहत्त्वपूर्ण ऐतहिासकिभूमकिा नभिाई थी□ शंकर अद्वैतवाद केअद्भुत व्याख्याकार थे□ काशी में चांडाल केसाथ उनका संवाद इस बात का प्रमाण है कि उनकेसमय में ही उनकी दार्शनकिस्थापनाओं केक्रांतकिारी नष्किर्ष नकिाले जाने लगे थे□ लेकनि समाज-व्यवस्था में जाति की जक□ न इतनी मजबूत थी कि आखरिकार उनका दर्शन भी यथास्थति केपक्ष में ख□ा हो गया और पारमार्थकिऔर व्यावहारकिसत्ता जैसी अवधारणा□ं नकिाली गइं, ताकि अद्वैत यानी पूरे वशि्व में □कही तत्त्व केदर्शन करने वाला सद्धिांत आखरिकार समाज केस्तर पर जाति और वर्गभेद को भी स्वीकार कर सके□

नवीं शताब्दी केआरंभ में तो यह ब्राह्मण और चांडाल के□ कहोने का वचिार अपने समय से बहुत आगे का था, लेकनि आज नहीं है□ क्या कसिी ने कभी सुना कि कसिी भी शंकराचार्य या अन्य महंत-मठाधीश ने जाति-व्यवस्था केखलिाफ□ कशब्द भी कहा हो□ हकीकत यह है कि ये सभी पीठ दकियानूसी और पुरातनपंथी हदिू धर्म का ही प्रचार-प्रसार करते है और शुद्धता और परंपरा केनाम पर हमेशा प्रगति केवरिोध में ख□ मलिते है□ यही नहीं, जगद्गुरु कहे जाने वाले ये शंकराचार्य अक्सर □कदूसरे केखलिाफ मुकदमे ल□ते हु□ भी पा□ जाते है□

इसल□ आश्चर्य नहीं कि साइं बाबा केमंदरि को होने वाली आय स्वामी स्वरूपानंद की आंख में ग□ रही है□ मंदरि में न जाने का उनका नर्दिेश मानना या न मानना उनकेअनुयायियों पर नर्भिर है□ लेकनि उनकी इस घोषणा का वरिोध करना जरूरी है कि साइं बाबा हदिू-मुसलमि □क्ता का प्रतीकनहीं थे□ उनके बारे में प्राप्त जानकारी केआधार पर नश्चिय केसाथ कहा जा सकता है कि वे भक्त और सूफी संतों की परंपरा केउत्कृष्ट प्रतनिधि थे और उनकेजीवन और वचिारों में धार्मकिसंकीर्णता का कोई स्थान नहीं था□ वे फकेकरकेरहते थे, □कटूटी-फूटी मस्जदि में उनका बसेरा था और वे हदिुओं और मुसलमानों केत्योहारों में समान रूप से शरिक्त करते थे□ जसि मस्जदि में वे रहते थे, उसका नाम उन्होंने द्वारका केनाम पर रखा था□ आज तक उनकेभक्त यह तय नहीं कर पा□ है कि वे हदिू थे या मुसलमान□ और उनकेभक्तों में सभी धर्मों केलोग शामलि भी है□

मगर यह भी □कक□वी सच्चाई है कि उनकेअधकित्तर भक्त उनकेप्रति इसल□ श्रद्धा-भक्ति रखते है, क्योंकि उन्हें वशि्वास है कि साइं की कृपा से उनकेसभी मनोरथ पूरे होंगे□ मनोरथ पूरे होने की आशा में और पूरे होने केबाद वे मंदरि में आकर लाखों रुप□ का च□ावा च□ाते है, उनकी प्रतमिा पर हीरे-जवाहरात से ज□ सोने केमुकुट पहनाते है और उनकी ईश्वर मान कर पूजा करते है, जबकि साइं बाबा ने कभी दावा नहीं कयिा कि वे ईश्वर का अवतार थे□ उनका प्रमुख जोर मानवसेवा और मानव की □क्ता पर था□

यह भी □ कविचित्र विसंगति है कि जिस संत ने जीवन भर फटे-पुराने कपड़े□ पहने, रूखा-सूखा खाया या फिर उपवास किया, और किसी भी तरह के कर्मकांड को बढ़ावा नहीं दिया, उसी के भव्य मंदिर बन रहे हैं, स्वर्णजटित सिंहासन पर उसकी सोने की प्रतिमा प्रतिष्ठित की जा रही है, दूध से उसे स्नान कराया जा रहा है और वे सारे कर्मकांड किए□ जा रहे हैं, जो आमतौर पर मंदिरों में होते हैं□ और, जिस संत ने सदा शांति, भाईचारे और अहिंसा का पालन किया, उसके भक्त स्वामी स्वरूपानंद के बयान के विरोध में उपद्रव कर और उनके पुतले जला रहे हैं□ उनकी भक्ति साईं बाबा के प्रति है, उनके जीवन के आदर्शों के प्रति नहीं□ होती तो वे स्वामी स्वरूपानंद के खिलाफ इस तरह का उन्मादग्रस्त आक्रोश प्रकट न करते□ उनका विरोध मुख्य रूप से इस बात पर है कि शंकराचार्य ने साईं बाबा के भगवान होने का खंडन किया है और हिंदुओं से उनके मंदिर में न जाने को कहा है□

शायद जब किसी संत के नाम पर धर्म या संप्रदाय कायम होता है, तो हमेशा ऐसा ही होता है□ वरना गरीब बढ़ई के पुत्र ईसा मसीह के नाम पर चले ईसाई धर्म के बहुसंख्यक कैथोलिक संप्रदाय के धर्मगुरु पोप के वैटिकन में इतनी धन-संपदा और वैभव न होता, जबकि ईसा की प्रसिद्ध उक्ति है कि सुई की नोंक में से होकर ऊंट गुजर सकता है, लेकिन धनी व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश नहीं पा सकता□ और, न ही करुणा पर आधारित इस धर्म के अनुयायी ईशनिंदा के नाम पर मध्ययुगीन यूरोप में लोगों को जिंदा जलाते□ हिंदू भी कहते हैं कि सभी को □ कही ईश्वर ने बनाया है और वह कण-कण में विद्यमान है, लेकिन उन्हें निचली जातियों में उस ईश्वर के दर्शन नहीं होते□

हमारी पुलिस और न्याय-व्यवस्था भी गजब की है□ पुलिस बलात्कार की शिकार महिलाओं की रिपोर्ट आसानी से दर्ज नहीं करती, लेकिन शिरिडी के थाने में □ कसाईंभक्त की स्वामी स्वरूपानंद के खिलाफ रिपोर्ट तुरंत दर्ज हो गई□ स्वामी स्वरूपानंद की किसी भी बात से सहमत न होते हुए भी यह समझ में नहीं आता कि उन्होंने क्या अपराध किया है? दरअसल, इन दिनों देश में जिस किस्म का माहौल पैदा किया जा रहा है, उसमें किसी से असहमत होना या किसी की आलोचना करना उस व्यक्ति या समुदाय की भावनाओं को आहत करना माना जाने लगा है□ इस किस्म की असहिष्णुता मूलत: लोकतंत्र-विरोधी है और इसका जम कर विरोध किए□ जाने की जरूरत है□ अगर यह प्रवृत्ति जमाती गई, तो भारत में किसी प्रकार के बौद्धिक विमर्श के लिए□ स्थान नहीं बचेगा, क्योंकि किसी भी प्रकार की असहमति को व्यक्त करने की इजाजत नहीं होगी□

इन दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय बहुत चर्चा में है□ □ कशैक्षिक और बौद्धिक संस्थान होते हुए भी उसने इस मामले में कोई अच्छा उदाहरण पेश नहीं किया और अकादमिक आजादी को कुचलते हुए □ के रामानुजन के निबंध 'तीन सौ रामायण' को पाठ्यक्रम से निकाल दिया□ इस प्रवृत्ति के पनपने से ही उन लोगों को शह मिली है, जो धार्मिक भावनाओं और परंपरा के नाम पर गंभीर बौद्धिक वाद-विवाद पर पूर्ण विराम लगा देना चाहते हैं□ स्वामी स्वरूपानंद को अधिकार है कि वे साईं बाबा को भगवान न मानें, वैसे ही जैसे साईं बाबा के भक्तों को उन्हें भगवान मानने का अधिकार है□ इस पर बहस निरर्थक है, क्योंकि यह आस्था का सवाल है□ पर इस बिंदु पर बहस की जानी चाहिए□ कि साईं बाबा हिंदू-मुसलिम □ क्ता के प्रतीक थे या नहीं□ दूसरे, उनके अनुयायियों ने उन्हें आज जो रूप दे दिया है, वह भी बहस की मांग करता है□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए□ क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए□ क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta